गुलदारों के बारे में भ्रांतियों का निवारण

गुलदारों के साथ जीना सीखना

परिचय

"गुलदारों के बारे में भ्रांतियों का निवारण और उनके साथ जीना सीखना" नाम की यह पुस्तिका उत्तराखंड में मानव–गुलदार संघर्ष से प्रभावित विभिन्न हितधारकों जैसे– स्थानीय समुदायों, वन विभाग, पुलिस और मीडिया के बीच जागरूकता कार्यक्रम में सहायता के लिए बनाई गई है। इस पुस्तिका का उद्देश्य गुलदार के जीवन और व्यवहार को बेहतर तरीके से समझने के लिए जागरूकता फैलाना और मानव–गुलदार संघर्ष के बारे में भ्रातियों और वास्तविकताओं को अलग–अलग करना है। साथ ही, यह पुस्तिका यह पड़ताल भी करती है कि गुलदारों के बीच रहते हुए भी सुरति रूप से जीने के लिए हम क्या–क्या कर सकते हैं।

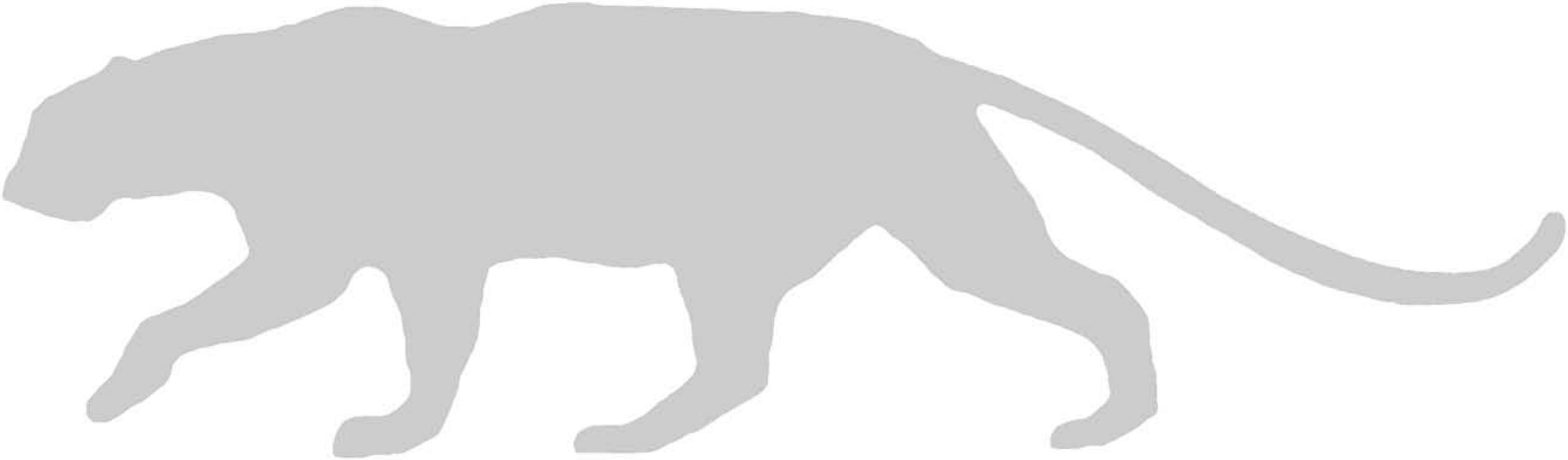

गुलदार का व्यवहार और जीव–वैज्ञानिक तथ्य

गुलदार के आहार में विभिन्न तरह की चीजें शामिल होती हैं: इसके आहार में कृंतक यानी चूहों और गिलहरियों जैसे कुतरकर खानेवाले जीव, पक्षियाँ, सरीसृप यानी रेंगनेवाले जीव, सूअर और घरेलू कुत्ते शामिल हो सकते हैं।

लेकिन मनुष्य इनका शिकार नहीं होते हैं, बल्कि इनके शिकारी होते हैं।

गुलदार बिल्ली परिवार का सदस्य है।

गुलदार एक निशाचर यानी रात में सक्रिय रहनेवाला जानवर है। वह दिन के समय ज्यादातर आराम ही करता है और रात में शिकार करता है।

जंगली जीवन में गुलदार लगभग 12 वर्षों तक जी सकते हैं।

गुलदारों का आपस में बहुत मजबूत सामाजिक जुड़ाव होता है।
गुलदार शावक पहले दो से ढ़ाई वर्षों तक अपनी माता के साथ ही रहते हैं।

हर गुलदार का अपना इलाका होता है और इसके इलाके का आकार भोजन की मौजूदगी पर निर्भर करता है। यदि भोजन की उपलब्धता अधिक होती है, तो उसके इलाके का आकार छोटा होता है।

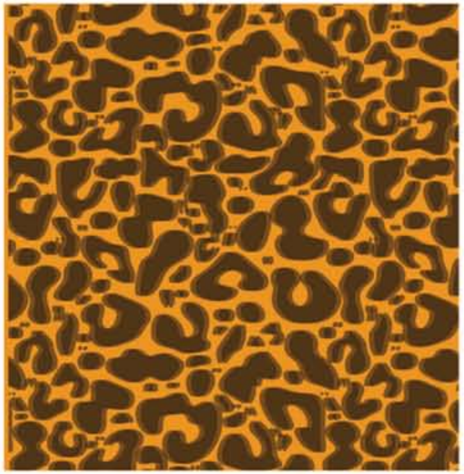

हर गुलदार के शरीर पर पाए जानेवाले धब्बों का पैटर्न अलग–अलग तरह का होता है।

वातावरण के अनुकूल खुद को ढाल लेनेवाली बड़ी जंगली बिल्लियों में गुलदार सबसे आगे है। यह जंगल में भी रह सकता है और साथ ही मनुष्यों की बस्ती के बहुत नजदीक भी।

अन्य सभी जंगली जानवरों की तरह गुलदार भी लोगों से बहुत डरते हैं।

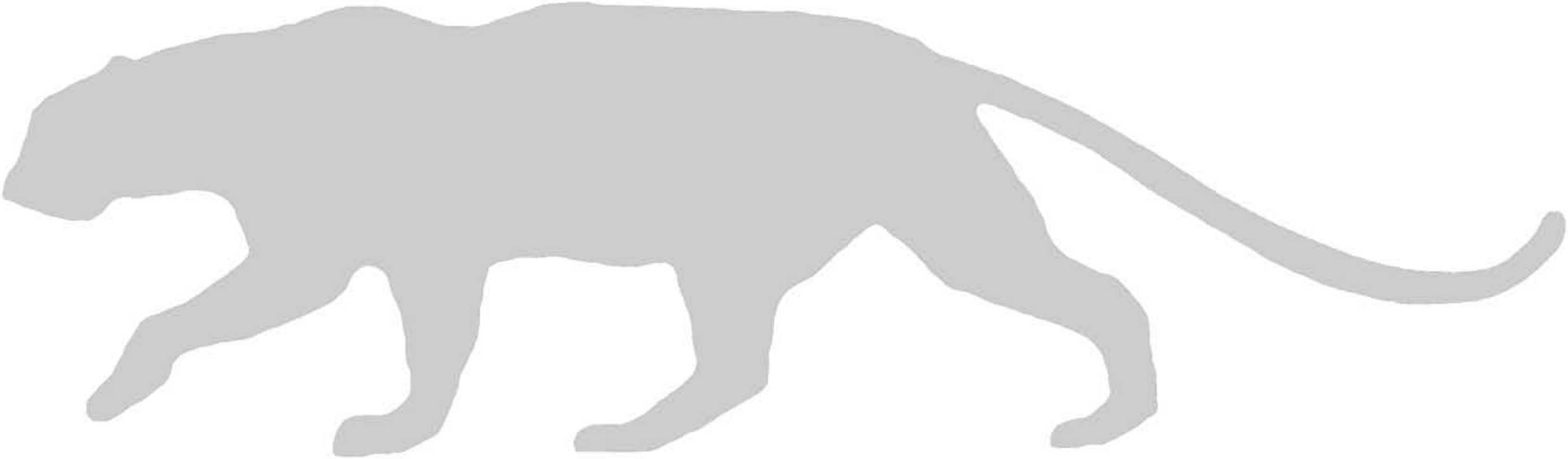

भ्रांति और वास्तविकता

भ्रांति

उत्तराखंड में गुलदार और मनुष्यों के बीच संघर्ष की घटनाएँ बढ़ रहीं हैं।

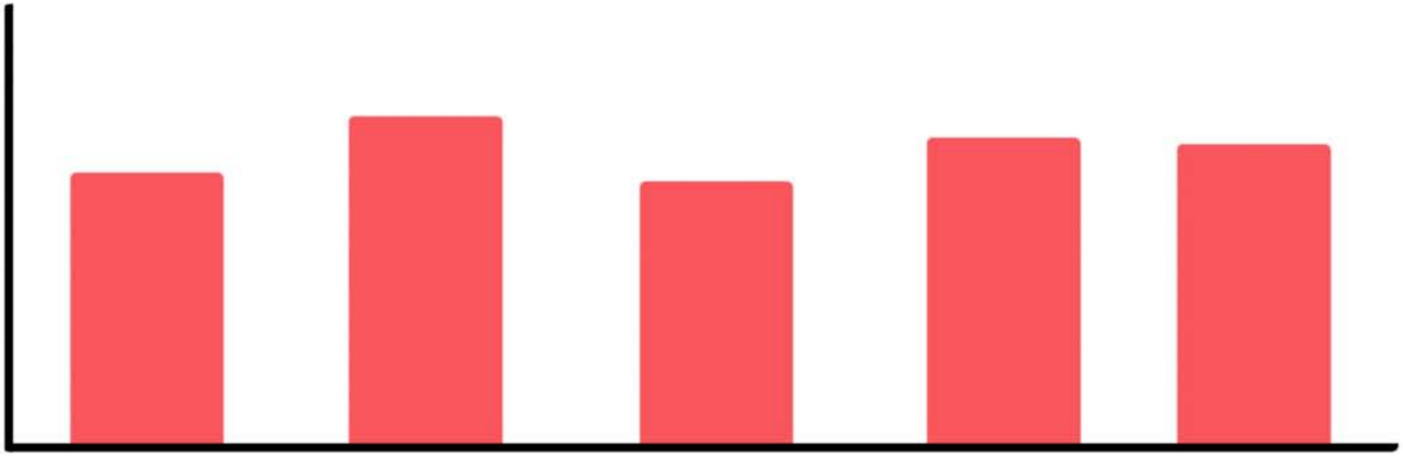

गुलदार और मनुष्यों के बीच संघर्ष 1998-2014

वास्तविकता

1998 – 2014 की अवधि में मनुष्यों पर गुलदारों के हमलों का वार्षिक औसत 60 है। 42 प्रतिशत ग्रामीणों और 70 प्रतिशत हितधारकों का मानना था कि मनुष्यों पर गुलदारों के हमलों में बढ़ोतरी हुई है। हालांकि हमलों में बढ़ोतरी या कमी की कोई प्रवृत्ति नहीं दिखाई देती है।

जिन वन प्रमंडलों में गुलदारों ने मानवों पर सबसे अधिक हमले किए वे हैं: गढ़वाल, टिहरी, पिथौरागढ़ और अल्मोड़ा। 50 प्रतिशत हमले घर के बाहर ही होते हैं। 83 प्रतिशत गाँवों का अनुभव है कि 5 साल की अवधि में मनुष्यों पर तेंदुए के 1 या 2 हमले हुए थे। पिछले पाँच वर्षों में बनैले मवेशियों और परित्यक्त खेतों में उल्लेखनीय बढ़ोतरी देखी गई है

भ्रांति

गुलदार केवल जंगल में ही रहते हैं।

वास्तविकता

गुलदार बहुत ही अनुकूलनीय बिल्लियाँ हैं, जो जंगलों के अंदर और बाहर दोनों ही इलाकों में रहते हैं।

वे राष्ट्रीय उद्यान या अभयारण्यों की मानव निर्मित सीमाओं को नहीं पहचानते हैं और जहाँ कहीं भी उन्हें रहने का स्थान और भोजन मिलेगा, वहाँ वह जाएंगे।

भ्रांति

गुलदारों के आवास में कमी और जंगल में भोजन लायक शिकार में कमी मानव–गुलदार संघर्ष का मुख्य कारण है।

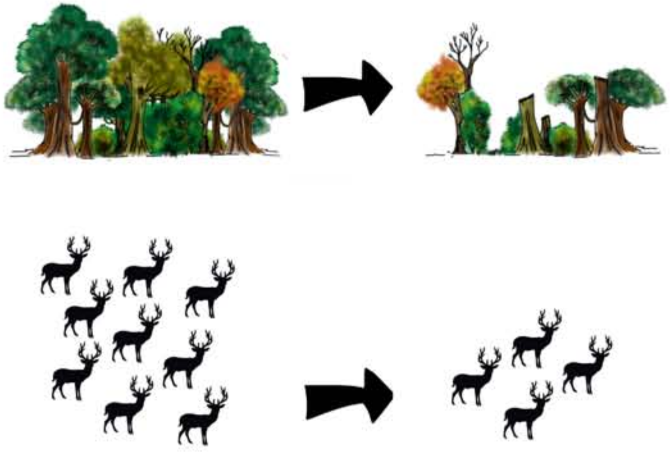

वास्तविकता

टिहरी और पौड़ी की तरह के पर्यावास जैसे कई स्थान उत्तराखंड में मौजूद हैं, लेकिन वहाँ गुलदारों के साथ संघर्ष या तो होते ही नहीं हैं या बहुत ही कम होते हैं।

गुलदार जंगली और घरेलू दोनों ही तरह के शिकारों को अपना भोजन बनाते हैं। जो भी उन्हें आसानी से पकड़ में आता है, उन्हें वे खाते हैं। घरेलू शिकार की तुलना में जंगली जंतुओं का शिकार करना बहुत मुश्किल होता है।

भ्रांति

एक बार यदि गुलदार मनुष्य के मांस का स्वाद चख लेता है,
तो वह नरभाी हो जाता है और केवल मनुष्यों को ही अपना शिकार बनाता है।

वास्तविकता

इसकी पुष्टि के लिए कोई वैज्ञानिक प्रमाण मौजूद नहीं है। हमारा मानना है कि जब कोई गुलदार बूढ़ा या घायल हो जाता है, तो जंगली जंतु या पालतू पशुधन का शिकार करने में असमर्थ होने पर वह मनुष्य का शिकार कर सकता है।

हालांकि, युवा गुलदारों को भी लोगों पर हमला करते देखा गया है। जबकि कई बूढ़े गुलदार मौजूद हैं, जो लोगों पर हमला नहीं करते हैं। जो कुछ भी हम कहते या मानते हैं वह केवल अप्रमाणित सिद्धांत ही होता है।

भ्रांति

हमें मालूम है कि गुलदार मनुष्यों को क्यों मारते हैं

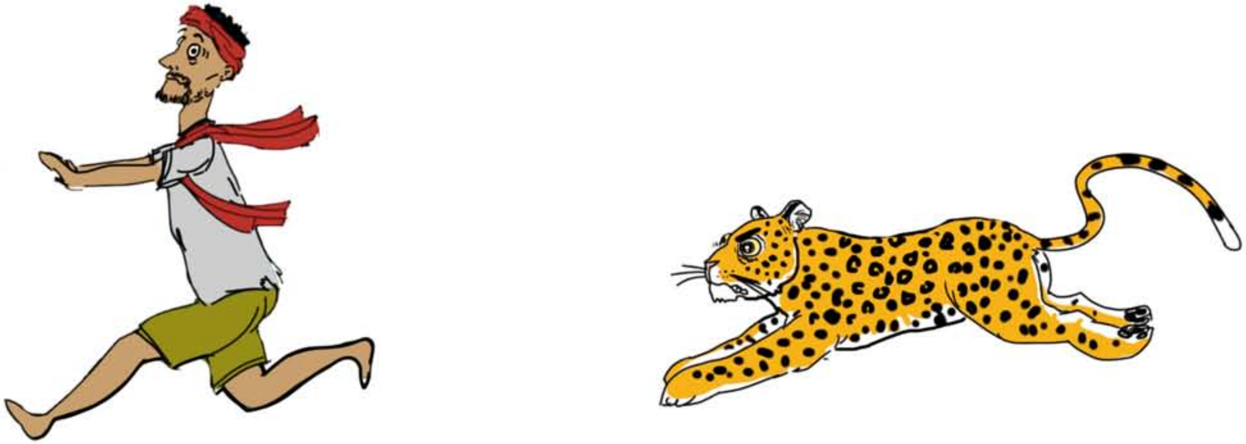

वास्तविकता

यह है कि हमें भी नहीं मालूम कि गुलदार मनुष्यों पर हमला क्यों करते हैं। हालांकि इस बारे में कई मान्यताएँ मौजूद हैं। कोई मानता है कि एक बूढ़ा गुलदार नरभक्षी बन सकता है; या फिर कि गुलदार बैठे हुए लोगों पर ही हमला करता है, खड़े लोगों पर नहीं; या यह भी कि घायल गुलदार ही लोगों की जान लेता है; या यह कि जब कोई व्यक्ति अचानक से गुलदार के सामने आ जाता है तो इसका परिणाम जानलेवा हो जाता है (हालांकि इसकी संभावना नहीं के बराबर होती है, क्योंकि गुलदार को हमेशा ही यह पता चल जाता है कि कोई मनुष्य उसके आस–पास है)। इसी तरह अनेकों मान्यताएँ हैं।

इनमें से किसी भी मान्यता को सही मानने के लिए हमारे पास कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

भ्रांति

गुलदार को अन्य जगहों पर स्थानांतरित कर देने से स्थानीय समस्याएँ हल हो जाती हैं।

वास्तविकता

जैसा कि महाराष्ट्र में गुलदारों के रेडियो कॉलरिंग द्वारा दिखाया गया है कि गुलदार उन मूल स्थानों पर वापस पहुँच सकते हैं, जहाँ उन्हें पकड़ा गया था।
दूसरे, ऐसे नए गुलदार जो स्थानीय परिस्थितियों से अपरिचित हैं, वे खाली इलाके पर लगभग तुरंत कब्जा कर लेते हैं। इलाके में नए होने और स्थानीय इलाके से अपरिचित होने के चलते नए गुलदार ऐसी चीजें कर सकते हैं, जिनकी वजह से संघर्ष बढ़ भी सकता है। स्थानान्तरण के बाद गुलदार का व्यवहार बदल सकता है। जंगल में छोड़े गए गुलदार मनुष्य के प्रति और अधिक आक्रामक हो सकते हैं।

भ्रांति

गुलदारों को मारने से संघर्ष कम हो जाएगा।

वास्तविकता

गुलदारों को मारना इस समस्या का समाधान नहीं है। यह पता लगाना बहुत कठिन है कि कौन सा गुलदार मनुष्यों पर हमले में शामिल था। इसलिए यह सुनिश्चित करने का कोई तरीका नहीं है कि किस गुलदार को मारा जा रहा है। गुलदारों के शिकार के दौरान घायल होनेवाले गुलदारों से मानवों पर हमले का खतरा बढ़ सकता है। जैसा कि रूस में रेडियो कॉलर लगे बाघों के अध्ययन से पता चलता है, गुलदारों को मारने (जवाबी हत्या या शिकार) की वजह से गुलदार का व्यवहार आक्रामक हो सकता है और मनुष्य के प्रति उसके व्यवहार में बदलाव भी आ सकता है।

हालाँकि यदि किसी गुलदार ने बार–बार मनुष्यों पर हमला किया है, तो मनुष्यों की सुरक्षा के लिए उसे पूरी तरह से हटाना जरूरी है। लेकिन यह भी जरूरी है कि हम अपने कार्यों की वजह से जानवरों को खतरनाक बनाना बंद करें।

भ्रांति

गुलदार के उच्च–घनत्व का मतलब है, ज्यादा संघर्ष।

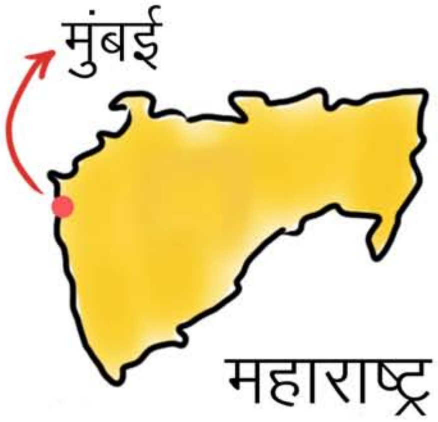

वास्तविकता

108 वर्ग किलोमीटर ेत्रफल वाली मुंबई के बोरीवली स्थित संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान में 35 गुलदार (2015 की जनगणना) रहते हैं। फिर भी, मनुष्यों पर बहुत कम हमले ही हुए हैं। इससे पहले लोगों के दबाव में जब वन विभाग गुलदारों को पकड़ा

करता था, तो वहाँ लोगों पर बहुत अधिक हमले होते थे। अब चूँकि वन विभाग ने गुलदार को पकड़ना और कहीं और भेजना कम कर दिया है, तो लोगों पर हमले भी बंद हो गए हैं।

भ्रांति

यह वन विभाग का गुलदार हैं!

वास्तविकता

यह किसका तेंदुआ है? गुलदार और अन्य वन्यजीव हालाँकि कानूनी तौर पर वन विभाग के अंतर्गत आते हैं, लेकिन उन्हें वास्तव में यह समझ नहीं आता कि कौन से मनुष्य उन्हें प्रभावित करते हैं। गुलदार उसी प्रकार प्राकृतिक दुनिया का हिस्सा है, जैसे कोई अन्य जीव। हमारी अपनी सुरक्षा के लिए यह जरूरी है कि हम इस समस्या की जिम्मेदारी स्वीकार करें और इस तरीके से इससे निपटना सीखें, जिससे दोनों पक्षों को, विशेष रूप से हम मनुष्यों को शांति मिले। संघर्ष की स्थिति जिस प्रकार बनती है, उसमें बदलाव लाने में गाँव के बाहर का अन्य कोई भी व्यक्ति अधिक प्रभावी नहीं हो सकता है।

भ्रांति

गुलदार और लोग एक साथ नहीं रह सकते।

वास्तविकता

भारत के कई हिस्सों में लोगों और गुलदारों के बीच सह–अस्तित्व मौजूद है।भारत में यह स्थिति एकदम आम है कि गुलदारों और लोग बहुत ही कम संघर्ष के साथ एक ही स्थान को साझा करते हों। मुंबई में संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान के भीतर ही वारली जनजाति रहती है। वे कई वर्षों से गुलदार के साथ रहते आ रहे हैं, और इनके बीच कोई संघर्ष नहीं हुआ है। राजस्थान में बेडा के लोग भी बिना किसी समस्या के गुलदार के साथ अपनी जगह साझा करते हैं। दोनों के बीच स्वस्थ और सम्मानजनक संबंध होता है। दोनों को मालूम होता है कि सावधानी कैसे बरतें और दोनों ही अपनी–अपनी जिंदगी अलग–अलग तरीकों से जीते हुए आगे बढ़ते रहते हैं।

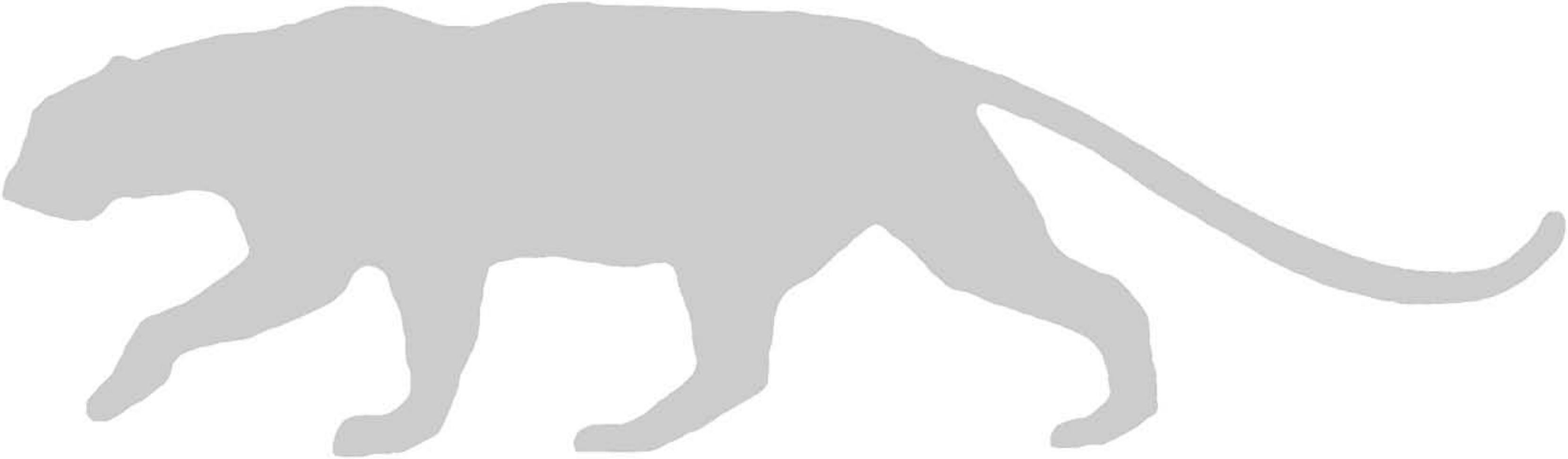

गुलदारों के साथ जीना

हम क्या कर सकते हैं?

हम अपने परिवार और दोस्तों के जीवन को सुरक्षित बनाने के लिए कुछ सामान्य सावधानियाँ बरत सकते हैं।

- स्कूल जाने वाले बच्चों को समूह में चलना चाहिए।
- यदि आप किसी गुलदार को देखें, तो आक्रामक न हों और गुलदार पर पत्थर या लाठी न फेंकें।
- रात में अकेले न चलें, समूह में चलें।
- अपने खुद के शौचालय या सामुदायिक शौचालय का प्रयोग करें। बहुत सुबह या देर रात में बाहर शौच के लिए अकेले न जाएँ।

अपने आंगन को रात में अच्छी तरह प्रकाशमान रखें।

अपने घर के आस–पास लालटेन घास या काला बासा जैसी झाड़ियों को साफ करते रहें, जो गुलदारों को छिपने की जगह प्रदान करते हैं।

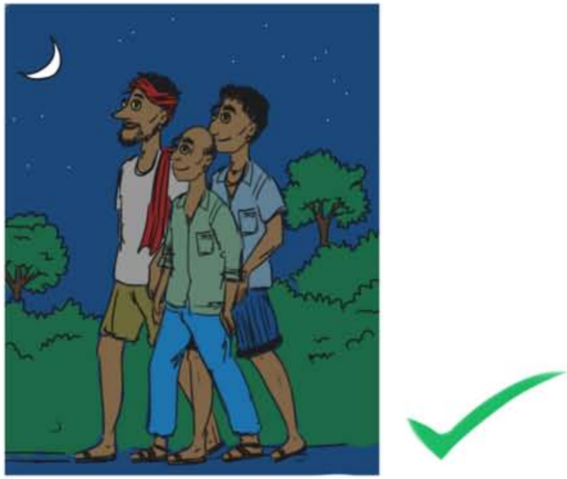

हम क्या कर सकते हैं?

बनैले मवेशियों को गाँव में खुले रूप से न घूमने दें। इससे गुलदार गाँव की ओर आकर्षित ही होंगे।

गुलदार द्वारा मारे गए पशुधन को अछूता और ज्यों का त्यों रहने दें। यदि आप मारे गए पशुधन को हटा देंगे, तो गुलदार को फिर से शिकार करना होगा।

यह सुनिश्चित करें कि आपके गाँव के बाहर के लोग आपके इलाके में गुलदारों का शिकार न करें, क्योंकि घायल गुलदार आपके गाँव के लोगों के लिए खतरनाक हो सकते हैं।

अपने गाँव के आस–पास छोटे जंगली जानवरों का शिकार रोकें ताकि गुलदार के लिए जंगली भोजन उपलब्ध रहे।

रात में अपने घरेलू जानवरों को अच्छी तरह से सुरक्षित रखें।

वन विभाग क्या कर सकता है?

अच्छी तरह से सुसज्जित और प्रशिक्षित टीम जो मनुष्यों पर हमलों की स्थिति में तुरंत कदम उठाती हो।

पीड़ितों/पीड़ितों के रिश्तेदार के प्रति सहानुभूति दिखाएँ।

सुनिश्चित करें कि स्थानीय लोगों की चिंताओं और आशंकाओं को मानवीय तरीके से सुना जाए और व्यक्तिगत रूप से आवश्यक मदद और आश्वस्ति प्रदान किए जाएँ।

घायल लोगों को त्वरित चिकित्सा–सुविधा प्रदान करें।

सुनिश्चित करें कि मुआवजा मिलने में प्रक्रियात्मक रूप से होने वाली देरी कम से कम हो और मुआवजा त्वरित रूप से मिले।

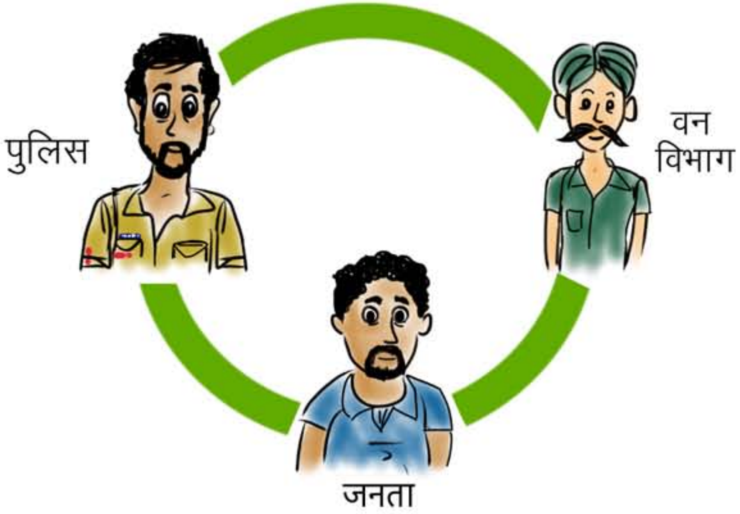

वन विभाग क्या कर सकता है?

किसी हमले के बाद कम से कम एक सप्ताह तक स्थानीय गश्त का संचालन करें, जिसमें वनकर्मियों और स्थानीय ग्राम दलों को शामिल करें।

स्थानीय सुझावों पर अमल करें, जैसे– अन्य कार्यों के अलावा अधिक इस्तेमाल होने वाले रास्तों पर रोशनी की व्यवस्था करना और झाड़ियों को हटाना।

मनुष्य–गुलदार संघर्ष को कम करने के बारे में जागरुकता फैलाने में मदद करें।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि समाचार ठीक से तरह से प्रसासित किए जाएँ, मीडिया प्रबंधन करें।

भीड़ नियंत्रण और मीडिया प्रबंधन जैसे मुद्दों में पुलिस और नागरिक प्रशासन को शामिल करें।

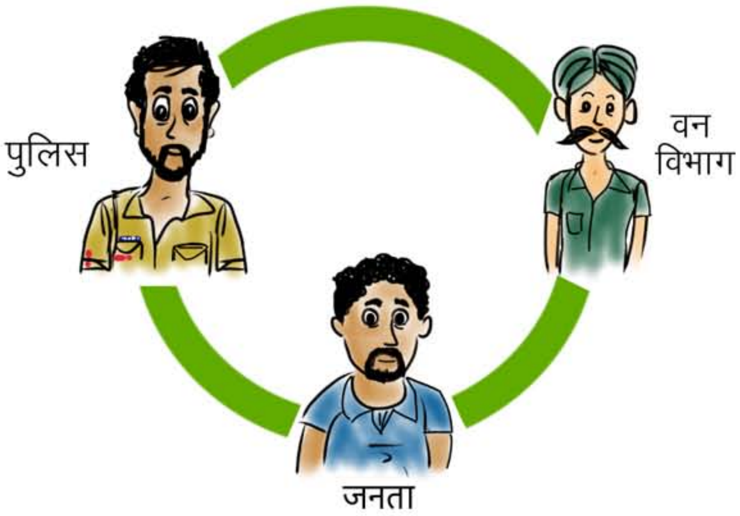

मीडिया क्या कर सकता है?

जिम्मेदाराना तरीके से रिपोर्टिंग करें। तथ्य–आधारित रिपोर्टिंग करें।

समाचार को सनसनीखेज न बनाएँ। रिपोर्टिंग से पहले विशेषज्ञों से बात करें।

मनुष्य–गुलदार संघर्ष के बारे में एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाएँ।

यह सुनिश्चित करने में मीडिया एक चेंज–एजेंट की भूमिका निभा सकता है कि विभिन्न प्रकार के लोगों के समूह (जैसे–राजनेता, वन विभाग, नागरिक प्रशासन आदि) संघर्ष को दूरगामी रूप से हल करने के लिए सकारात्मक तरीके से काम करें।

आभार

गुलदारों के बारे में भ्रांतियों का निवारण, 2017 © डब्ल्यूसीएस–इंडिया एवं तितली ट्रस्ट

जीव विज्ञान पोस्टर संबंधी पाठ © मृणाल एम. घोसाळकर एवं विद्या आत्रेय
भ्रांतियों का निवारण संबंधी पाठ © संजय सोंढ़ी एवं विद्या आत्रेय

जीव विज्ञान पोस्टर संबंधी रेखाचित्र © मीडिया वर्ल्ड, वर्षा बामुगड़े

भ्रांतियों का निवारण, कवर रेखाचित्र © अर्जुन श्रीवत्स

संकल्पनाः संजय सोंढी एवं विद्या आत्रेय | डिजाइनः अर्जुन श्रीवत्स

हिंदी अनुवादः शशि कुमार झा

सहयोगः
वाइल्डलाइफ कंजर्वेशन सोसाइटी, इंडिया | तितली ट्रस्ट | उत्तराखंड वन विभाग

वित्तीय सहयोगः ओएनजीसी लिमिटेड

उद्धरणः
सोंढी, एस. एवं वी. आत्रेय (2017)। तेंदुओं के बारे में भ्रांतियों का निवारण।
डब्ल्यूसीएस एवं तितली ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित।

TITLI TRUST

Conserving nature
Protecting the environment

UTTARAKHAND
FOREST DEPARTMENT

ओएनजीसी
ONGC

WILDLIFE CONSERVATION SOCIETY
INDIA